11

एक परिचय (2 पतरस)

एक और दो पतरस के लिखे जाने के बीच कितना समय बितता है यह पता नहीं है। और स्पष्ट जानकारी न होने के कारण हम यह मान लेत हैं कि पतरस रोम में ही था। क्योंकि पतरस ने कहा कि यह अपने पाठकों के नाम उसका दूसरा पत्र था (3:1), हम मान लेते हैं कि उसने उन्हीं मसीही लोगों को लिखा जिन्हें उसने पहला पत्र लिखा था। दोनों के बीच काफ़ी फासला था क्योंकि एशिया माइनर में प्रभु की कलीसिया की मण्डलियों में नई समस्याएं उठ खड़ी हुईं थीं और पतरस को उनके बारे में बताया गया था। दूसरे पत्र की चिन्ताएं पहले वाले पत्र से काफ़ी अलग थीं। पत्र की चिन्ताओं को और यह कि पतरस ने इसे क्यों लिखा देखने से पहले इसके लेखक पर विचार कर लेते हैं।

लेखक

2 पतरस जितना नये नियम की कुछ ही पुस्तकें होंगी जिनकी प्रामाणिकता के बारे में इतना अधिक और इतना ज़ोर देकर चुनौती दी गई हो। नये नियम की कुछ ही पुस्तकें होंगी जितनकी प्रामाणिकता 2 पतरस जितनी और फलपूर्वक चुनौती दी गई है। प्रामाणिकता का सम्बन्ध इस बात से है कि जिन व्यक्ति के साथ किसी पुस्तक का ना जोड़ा जा रहा है क्या वह वास्तव में उसने लिखी भी है या नहीं। चाहे हम यहां इस प्रश्न की समीक्षा नहीं करेंगे पर आप चाहें तो टिण्डेल के नयम नियम की कमैंट्री देख सकते हैं।[1] यह तथ्य कि इस पत्र का आरम्भ लेखक के रूप में शमौन पतरस के परिचय से होता है (1:1) हम में से अधिकतर के लिए काफ़ी है। थियोरी यह कहती है कि इसे पतरस ने लिखा, तो इसे पतरस ने ही लिखा था।

लिखे जाने का अवसर

जब हम दूसरी पत्र की तुलना पहले पत्र से करते हैं तो हमें इनके दृष्टिकोण में स्पष्ट परिवर्तन मिलता है। पहले पत्र में कलीसिया पर बारी संसार के दबावों की बात की गई थी जबकि दूसरे पत्र में कलीसिया की भीतरी समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। दूसरे पत्र में शायद ही दुख सहने की बात की गई हो।

दोनों पत्रियों में मसीह के द्वितीय आगमन की ओर देखा जाने के बावजूद दोनों का ढंग अलग था। पहली पत्री में पतरस और उसके पाठक प्रभु की तुरन्त वापसी की रह देख रहे थे। दूसरे पत्र में पतरस ने उन मसीही लोगों को तसल्ली दी कि जिन्हें समझ नहीं आ रहा था कि मसीह अब तक लौटा क्यों नहीं। 1 और 2 पतरस पतरस के बीच के अन्तरों को समझना आसान है यदि हम दोनों पत्रों के लिखे जाने के बीच में होने वाले विकास पर विचार करें।

2 पतरस में मुख्य शब्द समझ है। यदि किसी मसीही को प्रभु के विश्वासी बने रहना है तो उसे किसी हद तक सच्चाई को झूठ से अलग करना आना चाहिए। KJV में एक छोटे से पत्र में

know, known, knowing और knowledge अध्याय 1 में यह आठ बार आता है। विभिन्न यूनानी शब्द उनके पीछे खड़े हैं। तुलना करने पर, जानना और ज्ञान शब्दों के रूप 1 पतरस में केवल एक बार मिलते हैं। पतरस की बड़ी चिन्ता जब उसने 2 पतरस लिखा इस बात पर थी कि उसके पाठकों को क्या समझ है।

झूठी शिक्षा देने वालों ने कलीसियाओं पर हमला कर दिया था, जिस कारण समझ का संकट पैदा हो गया था। 2 पतरस का उद्देश्य मसीही लोगों को उस मूल संदेश का स्मरण कराना था जो उन्होंने पहले सुना था। पतरस ने अपने आपको झूठी शिक्षा देने वालों से अलग किया और अपने पाठकों को आश्वस्त किया कि परमेश्वर झूठी शिक्षा देने वालों का उनकी भक्तिहीनता के लिए न्याय करेगा। इसके विपरीत दामों के बजाय पतरस उन्हें बताना चाहता था कि मसीह दोबारा आएगा। उसके आने पर पृथ्वी और इसकी चीज़ें नष्ट हो जाएंगी और सब लोगों का न्याय होगा। पतरस के 2 पतरस का संदेश और लिखने का कारण यही था।

(*नोट: इस पुस्तक में और कहीं 2 पतरस की एक रूपरेखा।*)

टिप्पणी

[1]माइकल ग्रीन, *दि स।कंड एपिस्टल जनरल ऑफ पीटर एंड जनरल एपिस्टल ऑफ ज्यूड,* दि टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़, संपा. आर. वी. जी. टास्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1968)।

---

2 पतरस की एक रूपरेखा

अभिवादन: पतरस समान बहुमूल्य विश्वास वालों से (1:1, 2)

I. ऐसा करो तो कभी ठोकर नहीं खाओगे (1:3-21)।
   - क. ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी बनों (1:3-7)।
   - ख. अपने बुलाए और चुने जाने को पक्का करें (1:8-15)।
   - ग. प्रभु की सामर्थ और आगमन के अपने ज्ञान में मज़बूत रहें (1:16-21)।

II. झूठे शिक्षकों से सावधान (2:1-22)।
   - क. झूठे शिक्षक सत्य के मार्ग को बदनाम करते हैं (2:1-9)।
   - ख. झूठे शिक्षक ढीठ और हठी होते हैं (2:10-16)।
   - ग. झूठे शिक्षक सड़ाहट के दास हैं (2:17-22)।

III. प्रभु के आने की प्रतिज्ञा याद रखो (3:1-18)।
   - क. ठट्ठा करने वाले जानबूझकर भूल जाते हैं (3:1-7)।
   - ख. प्रभु धीरज धरता है (3:8-10)।
   - ग. आप कैसे लोग बनना चाहते हैं? (3:11-18)।